2022

HINDI (Honours) CBCS

B.A. Sixth Semester End Examination - 2022

PAPER - DSE3

(तुलसीदास)

Full Marks : 60 *Time : 3 hours*

The figures in the right-hand margin indicate marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
Illustrate the answers wherever necessary.

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **2×10=20**

क) राम काव्य परंपरा के किन्हीं दो कवियों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

ख) 'रामचरितमानस' कुल कितने कांडो मे रचित है, क्रमानुसार सभी कांडो के नाम लिखिए।

ग) 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' की रचना किस भाषा में हुई है?

घ) ''स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा''– का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

ङ) ''मानस'' की रचना में प्रयुक्त किन्हीं दो छन्दों के नाम बताइए।

च) ''विनय-पत्रिका'' की रचना किस भाषा में हुई है? इसमें कुल कितने पद हैं?

छ) तुलसीदास के माता-पिता के नाम बताइए।

ज) तुलसीदास द्वारा रचित किन्हीं चार प्रमाणिक रचनाओं के नाम लिखिए।

झ) तुलसीदास के गुरु का नाम बताइए। ''गोसाईचरित्र'' किसी रचना है?

ञ) ''गोरख जगायो जोग, भक्ति भगायो लौग।'' का अत्यंत संक्षिप्त अर्थ बताइए।

ट) ''कृष्णगीतावली'' के रचनाकार के नाम बताइए। सूरदास के अनुकरण पर गोस्वामी जी ने किस ग्रंथ की रचना की है?

ठ) ''खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,'' – पंक्ति किस रचना से उद्धृत है? रचनाकार का नाम लिखिए।

ड) ''नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो॥''

—उक्त पंक्ति किस रचना से उद्धृत है? रचनाकार का नाम बताइए।

ढ) ''नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्'' का अर्थ संक्षिप्त में बताइए।

ण) ''कवित बिबेक एक नहिं मोरें।
सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें॥''

—में रचनाकार क्या कहता चाहते हैं? रचना और रचनाकार का नाम बताइए।

2. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- 5×4=20

क) ''धीरजु धरेउ कुअवसर जानी।
सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही।
पिता रामु सब भाँति सनेही॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू।

तहँहँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू।।
जौं पै सीय रामु बन जाहीं।
अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं।।''

ख) ''मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा।
होइ सबहि विधि अवध अनाथा।।
गुरु पितु मातु प्रजा परिबारु।
सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू।।
रहहु करहु सब कर परितोषु।
नतरु तात दोइहि बड़ दोषू।।
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।''

ग) ऐसी मुढ़ता या मनकी
परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करन ओसकन की।
धुम-समुह निरखि चातक ज्यों, तृषित जाति मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता न वारि, पुनि हानि होती लोचनकी।।

घ) ''जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित-पावन जग, केही अति दीन पियारे।।
कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे।।''

ङ) ''ईसन के ईस, महाराजन के महाराज,
देवन के देव, देव! प्रान हूँ के प्रान हौ।
कालहू के काल, महाभूतन के महाभूत,
कर्म हू के करम, निदान के निदान हौ।

च) ''सुनु कान दिए नित नेम लिये रघुनाथाई के गुनगाथहिं रे।
सुख-मंदिर सुन्दर रूप सुधा उर आनि धरे धनु-भाथहि रे।
रसना निसि बासर सादर सों 'तुलसी' जपु जानकीनाथाहि रे।
करु संग सुशील सुसंतन सों, तजि कूर कुपंथ कुसाथहि रे।।''

छ) ''भोर भयो जागहु रघुनंदन।
गत-ब्यलीक, भगतनि-उर-चंदन।।
ससि करहीन, छीनदुति तारे।
तमचुर मुखर, सुनहु मेरे प्यारे।।

बिकसित कंज, कुमुद बिलखाने।
लै पराग-रस मधुप उड़ाने॥''

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्त दीजिए। 10×2=20

क) ''रामचरितमानस'' तुलसी की समन्वय-भावना का सफल प्रयास है–सिद्ध कीजिए।

ख) 'विनय-पत्रिका' के पठित अंशों के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

ग) 'कवितावली' के उत्तरकांड के आधार पर तुलसी के तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

घ) ''गीतावली' की रचना गोस्वामीजी ने सुरदासजी के अनुकरण पर की है।'' – शुक्लजी के इस कथन पर प्रकाश डालिए।